प्रा.डा.सौ.शशिप्रभा जैन
एम.ए.(हिन्दी),एम.ए.(समाजशास्त्र)
पीएच्.डी.
प्रपाठक एवं विभागाध्यक्षा,
हिन्दी विभाग, महावीर महाविद्यालय,
कोल्हापुर।
स्नातकोत्तर अध्यापिका एवं
शोधनिर्देशिका,
शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर।

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करती हूँ कि सौ.कविता अजीतसिंह सुल्हयान ने मेरे निर्देशन में "गिरिराज शरण द्वारा संपादित - "महानगर की कहानियाँ"- एक अनुशीलन" शीर्षक लेकर लघु-शोध प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल् उपाधि हेतु लिखा है। जो तथ्य इस प्रवंध में प्रस्तुत किए गए हैं, वे मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं।

शोध निर्देशिका

स्थल : कोल्हापुर

दिनांक : २५ दि. १९९७

प्रमाणपत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघु शोध-प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

२४ दिसम्बर, १९९७

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय
कोल्हापुर।

प्रख्यापन

यह लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक स्वना है, जो एम्.फिल. के लघु शोध-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत कर रही हूँ। यह स्वना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की एम.फिल. उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं की गई है।

कोल्हापुर

24 दिसम्बर १९९७।

शोध छात्रा

सौ. कविता अजीतसिंह सुल्याण

भूमिका

एम्.ए.करने के पश्चात् मैंने एम्.फिल में प्रवेश लिया। उत्तर भारत के हिन्दी भाषी क्षेत्र 'दिल्ली' से जुड़े होने के कारण हिन्दी मेरी मातृभाषा है। हिन्दी भाषी क्षेत्र में रहने के कारण कॉलेज के दिनों में हिन्दी की काफी पत्रिकाएँ पढ़ने का अवसर मुझे मिला। कहानी पढ़ना मुझे हमेशा से ही अच्छा लगता था लेकिन मैं अपना शोधकार्य उपन्यास में करना चाह रही थी तभी डा.श्रीमति शशिप्रभा जैन जो अब मेरी शोधनिर्देशिका है उनसे मेरी भेंट हुई और उन्होंने मेरी रूचि कहानियों की ओर जगाई और कहा कि तुम कहानी विधा पर शोध कार्य क्यों नहीं करती क्योंकि इस विधा में तुम दस मिनट में कहानी पढ़कर उसका आनन्द ले सकती हो। इसके अतिरिक्त उन्होंने मुझे गिरिराज शरण द्वारा संपादित 'महानगर की कहानियाँ' नामक पुस्तक भी दी, जिसे मैंने जब पढ़ा तो मुझे यूँ लगा कि जिस महानगर की छाया में मैं बीस वर्ष तक पली-बढ़ी हूँ, जिसके जीवन और घटनाओं को थोड़ा-बहुत मैंने भी भोगा है, उन्हीं का चित्रण इन कहानियों में किया गया है। मुझे ये कहानियाँ बहुत 'अपनी' और अपने आस-पास की लगी। इन कहानियों को पढ़ने के बाद मैंने इन्हें ही अपने शोध प्रबंध का विषय बनाने का निश्चय किया। इस निश्चय को करने के बाद मैंने अपनी गुरूवर्या डा.श्रीमति शशिप्रभा जैन से अनुमति ली और उनके निर्देशन में अपना शोधकार्य आरम्भ किया। मार्गदर्शक के रूप में उनका उपलब्ध होना मेरे लिए सौभाग्य की बात रही। उन्हीं की मार्गदर्शिता के कारण मेरा लघु शोध प्रबन्ध साकार रूप में आपके सामने लाने में मैं सफल हो सकी हूँ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में मैंने संकलित कहानियों का आधार लेकर महानगर के जीवन, जीवन की विषमताओं, समस्याओं को देखने का प्रयास किया। साथ ही संकलित कहानियों के कथाकारों का संक्षिप्त परिचय देने का यथासम्भव प्रयास किया है। जिन कहानीकारों का विस्तृत रूप से परिचय देने में मैं असमर्थ रही उसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। संकलित कहानियों का संक्षिप्त परिचय देते समय उनकी शिल्प कला को लेकर भी समग्र रूप से चिंतन किया है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने प्रस्तुत शोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में बाँटा है और अन्त में उपसंहार दिया है।

प्रथम अध्याय को 'महानगर से तात्पर्य' शीर्षक कर महानगर के शाब्दिक अर्थ, परिभाषाओं, भारत में महानगरों के उदय व महानगर के स्वरूप और लक्षणों को स्पष्ट किया गया है। इसके अतिरिक्त आधुनिक कहानियों में महानगरीय संवेदना को किस प्रकार स्थान मिला इसका भी परिचय दिया है।

द्वितीय अध्याय में 'संपादक गिरिराज शरण व अन्य कहानीकारों का संक्षिप्त परिचय' शीर्षक के अंतर्गत कहानीकारों का सामान्य परिचय व कहानीकार के रूप में उनके कृतित्व के बारे में चर्चा की है।

तृतीय अध्याय 'गिरिराज शरण द्वारा संपादित 'महानगर की कहानियाँ': संक्षिप्त परिचय' के अंतर्गत मैंने सभी कहानियों के कथानकों को बताने का प्रयास किया है। कहानी शिल्प कला के अन्य तत्वों का भी प्रस्तुत कहानियों में समग्र रूप से विवेचन है।

चतुर्थ अध्याय 'महानगर की कहानियाँ : प्रतिबिंबित महानगरीय जीवन' में मैंने महानगर के जीवन को विभिन्न कोणों से देखने का प्रयास किया है।

पंचम अध्याय 'महानगर की कहानियाँ : प्रतिबिंबित समस्याएँ' में संकलित कहानियों में दिखाई देने वाली विभिन्न प्रकार की समस्याओं का वर्णन किया है।

अन्त में दिया गया उपसंहार में समग्र लघु शोध प्रबंध के निष्कर्षों की सार रूप में प्रस्तुति है।

परिशिष्ट में आधार ग्रंथ सूची और संदर्भ ग्रंथ सूची दी गई है। पत्र-पत्रिकाओं की सूची को भी उसी के साथ जोड़ दिया गया है।

-o-o-o-o-

ऋण निर्देश

प्रातः स्मरणीय उदासीन बाबा पूरणदास जी के आशीर्वाद से ही मेरे जीवन के सभी कार्य पूर्ण होते है अतः सर्वप्रथम उनके श्री चरणों में शत् शत् प्रणाम।

प्रस्तुत शोध प्रबंध का जो साकार रूप आपके सामने है उसका श्रेय मेरी आदरणीय गुरूवर्या प्रा.डा.सौ.शशिप्रभा जैन जी को जाता है। जिन्होंने न केवल मेरा मार्गदर्शन किया बल्कि मुझे ऐसे स्नेहसूत्र में बाँध लिया जिससे मैं जीवनभर उऋण नहीं हो सकती।

एम.फिल्. के अध्ययन के दौरान हुई पिताजी की मृत्यु ने मुझे इतना शोकग्रस्त कर दिया था कि अध्ययन करना मेरे लिए बहुत कठिन हो चला था, उस समय शिवाजी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व विभागाध्यक्ष डा.मोरे जी शिवाजी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग प्रमुख प्रा.डा.श्री.पी.एस.पाटिलजी व प्रा.डा.श्री अर्जुन चव्हाण जी ने इस कठिन परिस्थिति में जो सहयोग मुझे दिया उसकी मैं आजीवन ऋणी रहूँगी।

शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर ग्रंथालय, महावीर कॉलेज कोल्हापुर ग्रंथालय व जयकर ग्रंथालय,पूना के कर्मचारियों के प्रति मैं आभारी हूँ जिन्होंने साम्रगी संकलन में मेरी सहायता की।

गृहस्थ जीवन में पग-पग मेरे साथ चलने वाले, विषम से विषम परिस्थितियों में मेरा साथ देने वाले, मेरे शोध कार्य में प्रेरणा व सहायता देने वाले श्रीमान् अजीत सिंह सुल्हयान के प्रति आभार प्रकट करना तो शब्दों के साथ खिलवाड़ करना होगा। मेरी आदरणीय ननद आशा संभाजीराव पवार का आभार व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ क्योंकि मेरी इस उपलब्धि में वे शुरू से अन्त तक मेरी सहायक रही हैं।

श्री मिलिंद भोसले जी के प्रति मैं आभार व्यक्त करती हूँ जिनके टंकलेखन के कारण ही मेरा लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत आकार पा सका है।

विनीत
सौ.कविता अजीत सिंह सुल्हयान

अनुक्रमणिका

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम	पृष्ठ क्र.
प्रथम अध्याय :	महानगर से तात्पर्य (१) महानगर का शाब्दिक अर्थ (२) भारत में नगरीकरण और महानगरों का उदय (३) महानगरों की उत्पति और विकास (४) भारत में महानगरों के विकास के कारण (५) आज के महानगरों का स्वरूप (६) महानगरीय समुदाय के कुछ लक्षण (७) आधुनिक कहानियों में महानगरीय संवेदनाएँ	१ से २२
द्वितीय अध्याय :	संकलित कहानियों के कहानीकारों का संक्षिप्त परिचय	२२ से ४८
तृतीय अध्याय :	संकलित कहानियों का संक्षिप्त परिचय	४९ से ९२
चतुर्थ अध्याय ::	महानगर की कहानियाँ : प्रतिबिंबित महानगरीय जीवन (१) पारिवारिक जीवन (२) आर्थिक जीवन (३) सामाजिक जीवन (४) राजनितिक जीवन (५) धार्मिक जीवन	९३ से १३१
पंचम अध्याय :	महानगर की कहानियाँ : चित्रित समस्याएँ (१) आर्थिक समस्याएँ (२) भौतिक समस्याएँ (३) सामाजिक समस्याएँ	१३२ से १७५

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम	पृष्ठ क्र.
	(४) मनोवैज्ञानिक समस्याएँ	
	(५) यौन समस्याएँ	
	(६) बाल समस्याएँ	
	(७) वृद्धों की समस्याएँ	
	उपसंहार	१७६ से १८९
परिशिष्ट :	आधार ग्रंथ व संदर्भ ग्रंथ सूची	१९० से १९१